5/6/21 ① ~~[illegible]~~

डॉ० अरुणा कुमारी
एसोसिएट प्रोफेसर
हिंदी
एस०एन०एस० कॉलेज,
जहानाबाद

B. A. Part I
Hindi Hons
Paper I
मध्यकालीन हिन्दी काव्य
कबीरदास

प्रश्न:- कबीरदास की प्रस्तुत पंक्तियों की व्याख्या प्रस्तुत करें। अथवा
प्रस्तुत पंक्तियों में निहित विचारों को व्यक्त करें।

एक निरंजन अलह मेरा,
हिंदू तुरक दहूं नहीं मेरा ।।
राखूं व्रत न मुहरम जानां,
तिसही सुमिरूं जो रहै निदानां ।
पूजा करूं न निमाज गुजारूं,
एक निराकार हृदय नमस्कारूं ।।
ना हज जाऊं न तीरथ पूजा,
एक पिछाण्यां तो क्या दूजा ।।
कहै कबीर भरम सब भागा,
एक निरंजन सूं मन लागा ।। ९९

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्तियाँ कबीर के पद से ली गई हैं। प्रस्तुत पद भक्तिकाल के कवियों में सबसे तेजस्वी और क्रांतिधर्मी व्यक्तित्व वाले कबीरदास की लेखनी की देन है।

प्रस्तुत पद में निर्गुण ब्रह्म की उपासना और भक्ति भावना पर जोर दिया गया है। साथ ही साथ समन्वयवादी भावना के आलोक में हिन्दू और मुसलमान दोनों धर्मों की एकता पर बल दिया गया है। कबीर दोनों धर्मों के आडंबरों पर भी प्रस्तुत पंक्तियों में प्रहार करते हैं।

क्रमशः—

Find a purpose in life so big it will challenge every capacity to be at your best.

5/6/21

B.A. I Part (2) [illegible]
Hindi Hons
कबीरदास

व्याख्या:— डॉ० अनामिका कुमारी

कबीर कहते हैं कि हिन्दू और मुसलमान दोनों मेरे नहीं हैं। मेरा तो एक मात्र [illegible] है। मैं तो उसी को जानता हूँ। मैं न व्रत, उपवास रखता हूँ और न रोजा मनाता हूँ। न मैं पूजा करता हूँ तथा न मैं नमाज पढ़ता हूँ। मैं तो एक ही ब्रह्म को जानता हूँ और वह है निर्गुण ब्रह्म।

हज और तीर्थ व्रत पर प्रहार करते हुए कबीरदास स्पष्ट कहते हैं कि मैं हज और तीर्थ व्रत भी नहीं करता हूँ। अब मेरा मन पूर्ण हो गया है। मैंने निर्गुण ब्रह्म को सही मायनों में पहचान लिया है। यही अनामी ब्रह्म है और मैं उसी की भक्ति-साधना और उपासना किया करता हूँ।

विशेष —

हिन्दू और मुसलमान दोनों धर्मों के बाह्याडम्बरों पर प्रहार
दोनों धर्मों में एकता का संदेश
निर्गुण ब्रह्म की भक्ति-साधना पर जोर
निर्गुण ब्रह्म ही सही और अनामी ब्रह्म है
पंथ की तरह निर्गुण ब्रह्म से ही सगुण ब्रह्म की उत्पत्ति माना है —

निराकार रूप माना सहज
ज्योति पुंज में है निराकार

यहाँ कबीर का भक्ति के साथ-साथ समाज सुधारक रूप अपने उत्कर्ष पर है।
कबीर की भाषा यहाँ सरल और स्पष्ट है।